रात्रीक्लास ओमशांति 28.9.67

तुम बच्चों से पूछते होंगे किस सतसंग में जाते हो। तो जरूर तुम ऐसे कहते होंगे कि हम स्कूल में पढ़ने जाते हैं। यह सतसंग नहीं है। भल सत के साथ बैठे हो। तुम कहेंगे हम पढ़ाई पढ़ते हैं। यह स्कूल है जहां हमको राजाई प्राप्त करने लिए पढ़ाया जाता है। ऐसा कब कोई कह न सकेंगे। हम जाते हैं राजयोग प्राप्त करने। राजयोग मशहूर है। हम जाते हैं राजाओं का राजा ,डबल सिरताज बनने। वह तो पहले हंसी समझेंगे। फिर तुम समझावेंगे हम ब्रह्माकुमारियां सतयुग के डबल सिरताज ,लक्ष्मी–नारायण बनने जाते हैं। सत्य नारायण की सच्ची2 कथा जिससे हम नर से नारायण ,नारी से लक्ष्मी बनते हैं। हम पढ़ने जाते हैं नर से नारायण बनने। कैसे?सो चलकर समझो। है सेकेंड की बात। अथवा बोलो हम जाते हैं जहां एक सेकेंड में मुक्ति–जीवनमुक्ति मिलती है। पढ़ाई से ही जीवनमुक्ति मिलती है। तुमको चलना हो तो चलकर देखो। हर 5000वर्ष बाद शिवबाबा आते हैं। वह ही स्वर्ग की रचता ,तो हमको स्वर्ग की बादशाही चाहिए। तो जरूर नर्क का विनाश होगा। गायन भी है महाभारत लड़ाई लगी थी। तुम भी अब चलो सुखधाम। पतित–पावन बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। बाबा समझाते रहते हैं ऐसे2 सर्विस करो। तुम बच्चों को खुशी रहेगी। चित्र भी तुमको मिल जावेगा। बोलो हम जाते हैं सत्य नारायण की कथा सुनने ;परंतु यह तो सच्ची2 सत्यनारायण की कथा है। हम जाते हैं बाप के पास। जो सबका बाप है। जौ भी आते हैं उनको जीवनमुक्ति मिलती है। बाबा कहते हैं मुझे याद करो। मनमनाभव। तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। फिर सतयुगी पुण्यात्मा बन जावेंगे। तुम्हारा काम है यह समझाते चलो। बोलो हम जाते हैं राजयोग सीख लक्ष्मी–नारायण सतयुग के बनते हैं। अब यह है पुरुषोत्तम संगमयुग पुरुषोत्तम बनाने लिए। कहते हैं जादू है ,यह है। यह तो अच्छा है पत्थर बुद्धि से पारस बुद्धि बनना। शौक होना चाहिए। सेकेंड में जीवनमुक्त बाप ही दे सकते हैं। स्वर्ग की बादशाही थी ना। यह चित्र बहुत अच्छा है। सीढ़ी भी बहुत काम की है ;परंतु तुम अक्षर पक्का2 याद करो। पर तुम अक्षर भूल जाते हो। पुरुषोत्तम यह लक्ष्मी–नारायण हैं ना। तो यह है पुरुषोत्तम बनने की कथा। आसुरी तमोप्रधान विकारी हैं ना। विकारी को तमोप्रधान कहा जाता हैं यह प्वाइंट्स निकालनी हैं। तुम बच्चों में याद की यात्रा मजबूत होगी तो याद में रह किसको भी देखेंगे तो शरीर का भान छूट जाता है। जिसके सामने बैठेंगे उनका भी शरीर का भान टूटता जावेगा। अशरीरी हो जावेंगे। सन्यासी लोग ब्रह्म को मानते हैं। हम जाय लीन होंगे। देह का भान वह भी छोड़ते हैं। बाकी एमऑब्जेक्ट कुछ भी नहीं। सुस्त मत बनो। बाप को याद करते2 पूज्य बन जावेंगे। गीता में भी है भगवानुवाच मुझे याद करो। भगवान तो शिवबाबा ही है। उंच ते उंच को याद करना चाहिए। बाप ने फरमान किया है अगर हम बाप को याद न करते हैं तो नाफरमानबरदार बन पड़ते हैं। माया अपोजिशन में हैं। बाप कहते हैं और सभी नशा में नुकसान है। एक बाप की याद की नशा रहे। याद से ही सुखधाम के मालिक बनेंगे। सर्विस की शौक में रहो, नहीं तो घड़ी2 भूल जावेंगे। जिन्न की कथा सुनाते हैं। बोला काम दो नहीं तो खा जावेंगे। बाप भी कहते हैं याद करते रहो ,नहीं तो माया खा जावेगी। जिन्न होकर बाप को याद करना है। बहुत सहज है और अति सहज है। इस कमाई को भल छोड़ो। इनसे ही बेड़ा पार होना है। काम करते रहो। याद करते रहो। हम शिवबाबा का बच्चा हूं। हिसाब–किताब चुक्त कर रहे हैं ;क्योंकि बाप से वर्सा लेना है। बाप को याद करने का पुरुषार्थ करते रहो। युक्तियां बताते रहो। याद बाप को ही करना है। घर को नहीं। वह जैसे ब्रह्म की याद हो गई। याद बाप को करना है। पतितत–पावन वह है। तुम जानते हो शिवबाबा परमधाम में रहते हैं। हम ....वहां जावेंगे। शांतिधाम को ही सिर्फ याद करते रहो। शांतिधाम कोई पतित–पावनी नहीं है। शिवबाबा को याद करना है। हम शिवबाबा को याद करते हैं पावन बनने लिए। बहुत मेहनत से समझाने की बात है। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट और साथ2 नमस्ते भी अर्थ सहित। ओम।